## विचार बिन्दु

नम्रता और खुदा के खौफ से इज्जत और जिन्दगी मिलती है। –सुलेमान

# इन समस्याओं का समाधान सरकार ही कर सकती है!

जब भी कहीं जाने के लिए सड़क पर निकलता हूं परेशान हो जाता हूं। घर से बाहर निकल कर कहीं भी जाना लगातार कष्टप्रद होता जा रहा है। लगता है मनुष्यों और वाहनों की बढ़ती भीड़ के आगे हमारी सड़कें बहुत छोटी पड़ने लगी हैं। बड़े शहरों में यह समस्या अधिक विकराल है, छोटे कस्बों और गांवों में अभी स्थिति इतनी विकट तो नहीं हुई है लेकिन उनका हाल भी यही होने वाला है। सड़कें वाहनों के बोझ तले दबी जा रही हैं। वाहन न केवल संख्या में, आकार में भी बड़े होते जा रहे हैं। हमारे पास अपनी अमीरी को दिखाने का जैसे यही एक तरीका रह गया है कि हम बिना ज़रूरत के भी छोटे वाहन को त्याग कर बड़े वाहन की सवारी करें। साइकिल से दोपहिया, और दो पहिया से चार पहिया तक आने में जितना समय लगा उससे बहुत कम समय मारुति 800 और नैनो जैसी छोटी कारों से सिडान और एसयूवी तक आने में लगा है। हमारी सड़कों पर अब इन्हीं का कब्ज़ा है और इसकी परिणति यह हुई है कि पैदल या साइकिल पर चलने वालों के लिए हमारी सड़कों पर कोई सुरक्षित जगह बची ही नहीं है। मैं तो यह सोच-सोचकर चिंतित होता हूं कि अगर यही गति रही तो पांच साल बाद हालात कैसे होंगे? हमारे आवागमन के लिए कोई जगह बचेगी भी या नहीं? अभी भी शहरों में थोड़ी-थोड़ी देर के बाद जाम के हालात पैदा होते हैं। एक किलोमीटर की दूरी तय करने में भी घण्टे दो घण्टे लग जाना आम बात हो गई है। अब आप समय से बहुत पहले घर से निकल कर भी आश्वस्त नहीं हो सकते कि ठीक समय पर अपने गंतव्य पर पहुंच ही जाएंगे।

संकट यही नहीं है। आपको जहां जाना है वहां पहुंच कर आपका दूसरा संघर्ष शुरू हो जाता है। आप पार्किंग ढूंढने लगते हैं, और वह मिलती नहीं है। दफ्तरों, बैंकों, और ऐसी तमाम जगहों के आसपास, जहां ज़्यादा लोगों की आवाजाही होती है, हालात बहुत ही विकट होते हैं। विवाह जैसे समारोहों में शामिल होने के लिए जाना मन में उल्लास की बजाय दहशत पैदा करता है क्योंकि विवाह स्थल के आस-पास पार्किंग की जगह मिलना नामुमकिन होता है, और आपकी सारी ऊर्जा तो यह तलाश करने में ही खप जाती है कि वाहन कहां खड़ा करें। इससे भी बड़ा संकट तब पैदा होता है जब आप समारोह में उपस्थित होकर लौटने को होते हैं और पाते हैं कि आपके वाहन के आगे किसी ने अपना वाहन इस कुशलता से लगा दिया है कि आप बाहर निकल ही नहीं सकते। कुढ़ते रहें मन में, लेकिन मुक्ति की कोई राह नहीं होती है। वैसे दोष ऐसा करने वाले का भी ज़्यादा नहीं होता है। वह भी तो बेचारा उसी संकट का मारा होता है जिससे आप कुछ देर पहले गुज़रे थे। उसे जहां जगह मिली, उसने अपना वाहन फंसा दिया।

शहरों में पार्किंग के साथ एक और संकट जुड़ा रहता है। आपको यह पता ही नहीं चलता कि कहां पार्किंग करना अनुमत है और कहां निषिद्ध है। आम तौर पर तो इस आशय की कोई स्पष्ट सूचना अंकित नहीं होती है, और अगर होती है तो आप लंबे समय तक उसकी अनदेखी को देखकर यह मान बैठते हैं कि अब सूचना पुरानी और निष्प्रभावी हो चुकी होगी। तभी अचानक सरकारी अमले की नींद टूटती है और वह आपका वाहन उठा ले जाता है। जयपुर में उच्च न्यायालय, सचिवालय कलेक्टरेट के पास लगी वाहनों की भीड़ देखकर कभी यह एहसास होता ही नहीं है कि यहां पार्किंग निषिद्ध है। सवाल यह भी है कि क्या किसी को यह बात समझ में नहीं आती है कि इन जगहों पर आने वाले सैंकड़ों हज़ारों लोग अपने वाहन पार्क करेंगे कहां? क्या सरकारी तंत्र का काम केवल वसूली करना और आम जन को परेशान करना है? उसे राहत देने की बात सोचने का ज़िम्मा किसी और का है?

और जब आम जन को परेशान करने की बात चल ही निकली है तो क्यों न लगे हाथों ट्रैफ़िक नियमों के उल्लंघन और उनके कारण होने वाले चालानों - नहीं, नहीं वसूली की बात भी कर ही ली जाए। बेशक सड़क पर चलने के कायदे हैं और उनका सबको पालन करना चाहिए। इस पालना में ज़रा-सी भी कोताही जानलेवा बन सकती है। लेकिन देखने की बात यह है कि क्या हालात ऐसे हैं कि आप नियमों का ठीक से पालन कर सकें? सड़कों पर यातायात को नियंत्रित करने के लिए जो बत्तियां लगी हैं वे इतनी निचाई पर हैं कि अगर आप उनसे तीन-चार वाहन पीछे हों तो वे आपको नज़र ही नहीं आएंगी। आप तो केवल अगले वाहन का अनुकरण करते हुए चलते जाएंगे। बत्तियां कब खराब हो जाएंगी, पता नहीं, और तब चौराहे पर जो कार्मिक यातायात नियंत्रित करता है वह आपको नज़र आ जाएगा, इसकी संभावना बहुत ही कम रहती है। ऐसे में आप कैसे उसके निर्देशों का पालन करेंगे? बहुत सारी जगहों पर लाल बत्ती वाले खम्भों के आगे कोई दूसरा खम्भा या कुछ और इस तरह लग होता है कि उनकी दृश्यता बहुत कम हो जाती है। किसी को नहीं सूझता कि एक अभियान चलाकर इस समस्या का निराकरण कर दिया जाए। हमारी सड़कों की जो हालत है, उसके बारे में कुछ भी कहना अनावश्यक है। जिसका जहां मन करता है वह वहीं स्पीड ब्रेकर बनवा लेता है और जिसका जब मन करता है वह स्पीड ब्रेकर के बीच वाहन दौड़ाने की गुंजाइश निकाल लेता है। सड़कों पर गड्ढे पड़े रहते हैं, उन्हें ठीक करने की सुध तभी आती है जब वहां से किसी वीआईपी को गुज़रना होता है। कुछ बरस पहले बीआरटीएस गलियारों का निर्माण किया गया था। गलियारे तो बना दिए लेकिन उनमें चलने के लिए बसों का इंतज़ाम करना भूल गए। अब उन गलियारों का कोई धणी धोरी नहीं है। जिसका मन चाहे, और जो हिम्मत कर ले वह उस गलियारे में घुस जाता है। अब सुना है कि सरकार इन गलियारों को ध्वस्त करने जा रही है। पहले उन्हें बनाने पर पैसा खर्च किया, अब नष्ट करने पर करेंगे। कोई पूछने वाला नहीं है कि यह सब किसके लिए किया गया है! शहरों के बहुत सारे चौराहों को लाल बत्ती से मुक्त किया जा रहा है। यह कोई क्यों नहीं सोचता कि अभी हमारी जनता इस व्यवस्था के लिए सुपात्र नहीं है। ऐसे किसी भी चौराहे पर खड़ा होकर यह देखा जा सकता है कि लोग किस तरह का ग़ैर ज़िम्मेदारी भरा बर्ताव करते हैं।

**सरकार का ध्यान इस तरफ भी जाना चाहिए कि सार्वजनिक परिवहन प्रणाली को मज़बूत कर काफी हद तक ट्रैफ़िक समस्या को कम किया जा सकता है। ख़ास तौर पर बड़े शहरों में नगरीय परिवहन व्यवस्था को अपनी प्राथमिकता में लाकर सरकार जनता को बहुत बड़ी राहत दे सकती है।**

सफेद वर्दी वाले ट्रैफ़िक पुलिस कर्मी बहुत मुस्तैदी से ट्रैफ़िक नियमों का उल्लंघन करने वालों के चालान काटते हैं। सरकार ने नियमों का उल्लंघन करने वालों पर आर्थिक दण्ड काफी बढ़ा दिया है। ऐसा करना ज़रूरी भी था। अगर लाल बत्ती जंप करने पर सौ रुपये का जुर्माना लगाएंगे तो इतनी कम राशि आपको ऐसा करने से कभी नहीं रोकेगी। लेकिन अब जुर्माना राशि बढ़ा देने का दुष्परिणाम यह हुआ है कि कल तक जो लोग अच्छे नागरिक की भूमिका निबाहते हुए जुर्माना देकर रसीद कटवाना पसंद करते थे वे भी ट्रैफ़िक कर्मी को कुछ दे-दा कर काम चलालेना फायदेमंद मानने लगे हैं। पांच दस हज़ार बचाने के लिए थोड़ी सी अनैतिकता उन्हें बुरी नहीं लगती है। क्या इस बारे में गंभीरता से कोई विचार नहीं होना चाहिए? क्या हम कोई तरीका नहीं निकाल सकते कि अवैध और नियम विरुद्ध वसूली न हो। इसके अलावा, यह भी देखा जाना चाहिए कि इन पुलिसकर्मियों का काम केवल जुर्माना वसूली तक सीमित न रहे, ये ट्रैफ़िक को भी व्यवस्थित करने का काम करें। किसी भी व्यवस्था में आर्थिक दण्ड अंतिम कदम के रूप में प्रभावी होने चाहिएं। हमने इसे पहला और आखिरी कदम बना रखा है।

हमारे शहरों में ट्रैफ़िक व्यवस्था में बहुत बड़ी बाधा अतिक्रमण हैं। आप देखेंगे कि इसके चलते सड़कों के चौड़ाई आधी रह गई है। बाज़ारों में दुकानदारों का अतिक्रमण जितना बुरा है उतना ही बुरा रिहायशी कॉलोनियों में वहां रहने वालों द्वारा किया गया अतिक्रमण है। कहीं हरियाली के नाम पर तो कहीं रैम्प के नाम पर लोगों ने चार-चार छह छः फिट ज़मीन दबा रखी है। उनके इस कृत्य से गलियों की चौड़ाई बहुत कम हो गई है। क्यों नहीं सरकार एक नियमित अंतराल पर इन अतिक्रमणों को हटाने का काम करती है? बाज़ारों से गुज़रने वाले अधिकारियों की नज़रें वहां के अतिक्रमण पर कभी क्यों नहीं पड़ती है? जन प्रतिनिधियों को उनके चुने जाने के बाद कुछ दिनों तक सब कुछ नज़र आता है, फिर उनकी आंखों पर भी पट्टी बंध जाती है। वैसे उन्हें नज़र भी वही आता है जो उनके एजेण्डा के अनुकूल होता है। अगर सरकारी मशीनरी ठीक से काम करे और ये अतिक्रमण हट जाएं तो यातायात कुछ तो सुगम हो।

सरकार का ध्यान इस तरफ भी जाना चाहिए कि सार्वजनिक परिवहन प्रणाली को मज़बूत कर काफी हद तक ट्रैफ़िक समस्या को कम किया जा सकता है। ख़ास तौर पर बड़े शहरों में नगरीय परिवहन व्यवस्था को अपनी प्राथमिकता में लाकर सरकार जनता को बहुत बड़ी राहत दे सकती है। अगर मुझे कहीं जाने के लिए अच्छी सिटी बस सुलभ हो जाए तो क्यों मैं निजी वाहन को सड़क पर लाऊंगा? दूसरी बात यह कि शहरों की वाहन संकुलता को कम करने के लिए फ्लाईओवर्स और अण्डर पास की दीर्घकालीन योजनाएं बनाई जाकर उन्हें हर हालत में निश्चित अवधि में पूरा किया जाए ताकि जनता को राहत मिले। अभी होता यह है कि जब संकट बहुत गहरा जाता है तब सरकार उस संकट के समाधान के बारे में विचार करना शुरू करती है और जब तक वह विचार कार्य रूप में परिणत होता है तब तक उससे मिलने वाली राहत ऊंट के मुंह में जीरे के समान रह जाती है क्योंकि इस बीच के समय में संकट कई गुना और बढ़ चुका होता है।

अन्य बहुत सारी समस्याओं के साथ शहरों की भीड़ भाड़ और बार-बार लगते जाम, हमारी सड़कों का असुरक्षित होना और लोगों का ट्रैफ़िक नियमों के पालन के प्रति उदासीन होना हमारे समय की बहुत बड़ी समस्याएं हैं। इनमें से अधिकांश का समाधान सरकार ही कर सकती है।

क्या नई सरकार से इस दिशा में कोई उम्मीद की जानी चाहिए?

**–अतिथि संपादक,**
**डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल,**
**( शिक्षाविद और साहित्यकार )**

# प्राथमिक शिक्षा का पिछड़ापन 2047 तक कैसे विकसित करेगा भारत को

राजेन्द्र जोशी

हिन्दी बिगड़ गई, मातृभाषा अपना स्थान नहीं बना सकी। गणित से डर अब भी बना हुआ है, फिर सुधरा क्या है, इंटरनेट और मोबाइल कंपनियों की सेहत में सुधार हुआ है। ग्रामीण क्षेत्र हो या शहर, शिक्षा की स्थिति जस की तस बनी हुई है।बच्चे धारा प्रवाह पढ़ नहीं सकते, गणित के सवाल कर नहीं सकते, शिक्षा की बदहाल होती स्थिति पर सवाल खड़ा करने वालों की बात मानने को कोई तैयार नहीं है। ऐसे में देश का भविष्य 2047 में कैसे विकसित होगा। केवल बड़े-बड़े पुल बनाने से, काली-गोरी सड़क बनाने से, बड़े-बड़े भवन बनाने से, या रोज-रोज फ्री में अनाज बांटने से 2047 में हम विकसित बन सकते? शिक्षा की स्थिति में कैसे सुधार हो सकता है 2047 तक, इसके बारे में शिक्षा प्रणाली 2020 पर फिर से मंथन करना होगा। पिछले दिनों दो स्थितियां हमारे सामने आई। जिसमें दोनों ही स्थितियों के कारण हमारी प्राथमिक शिक्षा प्रणाली पर सवाल दर सवाल खड़े हो रहे हैं, एक तरफ प्रथम फाउंडेशन है ने 24 राज्यों के 28 जिलों में अनुसंधान कर अपनी सर्वे रिपोर्ट प्रस्तुत की, उसके अनुसार तो 2017 के बाद 2024 में स्थितियां और भयावह हुई है। प्राथमिक शिक्षा की निरंतर बदहाली के बावजूद सरकारो ने कितना ध्यान शिक्षा पर केन्द्रित हुआ। बल्कि कोरोना के दौरान इंटरनेट कंपनियों ने सरकारों के माध्यम से समाज को अपना प्रोडक्ट बेचा और बच्चों के दिमाग में इंटरनेट की घुसपैठ बढ़ाकर शिक्षा को धकेलने का उपक्रम हुआ। इससे इंटरनेट का व्यापार तो बढ़ गया, फलता-फूलता गया, सोशल मीडिया का भरपूर इस्तेमाल होता गया, परंतु बच्चों का दिमाग फल फूल नहीं रहा।

इंटरनेट के दौर में हर घर स्मार्टफोन पहुंच गया, जब कंप्यूटर की बारी आई तो वह तेजी से स्थान नहीं बना सका। परंतु स्मार्टफोन चलाना, उसकी तकनीक का इस्तेमाल करना बच्चों के जहन में आ गया। लेकिन जब पढ़ाई-लिखाई की बारी आती है तो विद्यार्थी मोबाइल से कितना पढ़ पाते हैं या डिजिटल तकनीक का इस्तेमाल शिक्षा में कर पाते हैं, इसका सकारात्मक उपयोग कितना हो पता है यह शिक्षा की सालाना रिपोर्ट से चिंताजनक स्थिति ही सामने आई है। 14 से 18 साल के विद्यार्थी दूसरी कक्षा के स्तर तक का पाठ नहीं पढ़ पाते, छोटी-छोटी गिनती नहीं कर पाते, धाराप्रवाह पढ़ अंग्रेजी और हिन्दी नहीं पढ़ पाते, अपनी मातृभाषा में सीधे पढ़ नहीं सकते, ऐसे में जोड़ बाकी तो दूर की बात है। शिक्षा की अनदेखी का कारण क्या रहा। अवसर तलाश कर इंटरनेट ने अपना स्थान बना लिया। सरकारों ने और शिक्षाविदों ने भी यह नहीं सोचा कि यह स्मार्टफोन-इंटरनेट केवल मनोरंजन के लिए होगा और इसके दुष्परिणाम सामने आयेंगे।

प्राथमिक शिक्षा की चिंताजनक स्थिति और बच्चों की नींव कमजोर होना इसके लिए अनेक कारण जिम्मेदार हैं। परंतु सबसे बड़ा कारण जिसकी मैं बार-बार चर्चा करता रहा हूं, प्राथमिक शिक्षा और माध्यमिक शिक्षा को आपस में जोड़ना, प्राथमिक और उच्च प्राथमिक शिक्षा को माध्यमिक शिक्षा में समायोजित करना, अनेक स्कूलों को बंद करना, जिसके कारण प्राथमिक शिक्षा पर पूर्ण रूप से ध्यान नहीं दिया जाना। बेहतर शिक्षा का प्रबंध नहीं होना प्राथमिक शिक्षा के पिछड़ने का कारण माना जाना चाहिए।

दूसरी तरफ राजस्थान के भीलवाड़ा जिले की अकेली रिपोर्ट और राष्ट्रीय रिपोर्ट के आंकड़े और परिणाम लगभग एक जैसे ही है। समय रहते प्राथमिक शिक्षा में इंटरनेट तकनीक और स्मार्टफोन के उपयोग पर ध्यान नहीं दिया गया, इस पर विचार नहीं किया गया तो प्राथमिक शिक्षा को लगातार पिछड़ेपन की परिस्थितियों से कोई नहीं रोक सकता। स्मार्टफोन के इस्तेमाल से बुनियादी क्षमताओं में तो विद्यार्थी पीछे रह ही रहे हैं, साथ ही लगातार नींव कमजोर होती जा रही है। बच्चे स्कूल से आने के बाद दिनभर घर में स्मार्टफोन में खोए रहते हैं जिससे बच्चों के मानसिक संतुलन एवं आंखों की रोशनी पर भी आने वाले समय में चिंताजनक स्थितियां होती दिखाई दे रही है।

**–राजेन्द्र जोशी,**
**शिक्षाविद् एवं कवि-कथाकार।**

# कोटा के आर्यन सिंह ने किसानों के लिये "एग्रो बोट-2.0" बनाया

**कोटा,** (निसं)। देश के किसानों को अपने खेत में फसलों की बुवाई, कटिंग, हार्वेस्टिंग, पैदावार और मिट्टी की उर्वरकता बढ़ाने के लिये महंगे उपकरण खरीदने की आवश्यकता नहीं रहेगी। कोटा के छात्र आर्यन सिंह ने आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस पर आधारित ऐसा सस्ता "एग्रो बोट-2.0" तैयार किया है, जिसकी मदद से किसान कहीं भी बैठकर अपनी पैदावार की प्रभावी मॉनिटरिंग कर सकेंगे। कोटा के आर्यन सिंह को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने साइंस एंड टेक्नोलॉजी क्षेत्र में नये इनोवेशन के लिये राष्ट्रीय बाल शक्ति पुरस्कार से सम्मानित किया है।

नई दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 30 मिनट आर्यन से मिले और भारतीय किसानों के लिये बनाये गये अनूठे एग्रो बोट 2.0 की विस्तार से जानकारी ली। उन्होंने विश्वास दिलाया कि तुमने फसलों की गुणवत्ता बढ़ाने के लिये अनूठा सस्ता रोबोट तैयार किया है, इसे देश के आम किसानों तक पहुंचाने के लिये केंद्र सरकार मदद करेगी। प्रधानमंत्री ने मेरा साथी एप बनाने पर उसे माय जीओवी डॉट इन वेबसाइट पर ब्रांड एम्बेसेडर बनाया है। कोटा पहुंचने पर एस.आर.पब्लिक स्कूल में एक समारोह में आर्यन को माता-पिता के साथ सम्मानित किया गया। इस स्कूल में पढ़ते हुये कक्षा-9वीं से उसने अटल टेंकरिंग लैब में इस प्रोजेक्ट पर कार्य प्रारंभ किया था। कोरोना महामारी के दौरान मेंटर ओपी सोनी के साथ वह लगातार इस पर काम करता रहा। 2023 में उसने एक बगीचे में सौर उर्जा के साथ इस एग्रो रोबोट का सफल परीक्षण किया।

छात्र आर्यन को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने राष्ट्रीय बाल शक्ति पुरस्कार से सम्मानित किया।

- **इसकी मदद से किसान कहीं भी बैठकर अपनी पैदावार की प्रभावी मॉनिटरिंग कर सकेंगे**
- **राजस्थान से इकलौते छात्र आर्यन को राष्ट्रीय बाल शक्ति पुरस्कार-2024 मिला**
- **प्रधानमंत्री ने मेरा साथी एप बनाने पर आर्यन सिंह को माय जीओवी डॉट इन वेबसाइट पर ब्रांड एम्बेसेडर बनाया**

आर्यन ने दावा किया कि इस सस्ते रोबोट को किसान उबड़-खाबड़ जमीन पर भी चल सकता है। गड्ढे से लेकर समतल जगहों तक ये काम करता है। साथ ही बीज बोने और फसलों की कटिंग में यह बहुत मददगार है। इसकी मदद से मिट्टी की उर्वरकता, पौधों की गणना, पानी की आवश्यकता के बारे में जान सकते है। यह भी पता लगा सकते हैं कि कितनी फस्ल खराब हुई है, बाकी किस हालात में है। यह पूरी जानकारी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस बेस पर देता है। खरपतवार को अलग रंग देने के लिए उस पर तुरंत स्प्रे कर दिया जाता है, ताकि जब खेत में जाए तो उन पौधों को तुरंत उखाड़ कर अलग किया जा सके।, यह रोबोट फसलों में कीट पतंगे, टिड्डी दल या फिर किसी जानवर के प्रवेश की जानकारी देता है। इसमें लगे सिक्यूरिटी कैमरे से पता चलता है कि खेत में किसी व्यक्ति ने प्रवेश किया है या जानवर ने।

**देश की प्रथम एटीएल को मिला अवार्ड:-** एसआर पब्लिक स्कूल के निदेशक अंकित राठी ने बताया कि डीएसटी व नीति आयोग द्वारा देशभर में कई स्कूलों में अटल टेंकरिंग लैब खोली गई हैं। इनमें राजस्थान के कोटा शहर की एटीएल से पहले छात्र ने किसानों के लिये उपयोगी व सस्ता रोबोट तैयार कर साइंस एंड टेक्नोलॉजी में नया अनुसंधान किया है। इसी आधार पर उसे राष्ट्रीय बाल शक्ति अवार्ड से सम्मानित किया गया है। आर्यन बीटेक की पढ़ाई में छुट्टियों में अटल टिंकरिंग लैब आकर अपने रिसर्च प्रोजेक्ट पर काम करते हैं। राठी ने कहा कि एटीएल प्लेटफार्म से हम तकनीकी संसाधन व गाईडेंस देकर बच्चों को उनकी कल्पनाओं को साकार करने का अवसर दे रहे हैं।

गत वर्ष लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला की पहल पर कोटा में आयोजित एग्रो फिस्ट में तत्कालीन केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर आर्यन सिंह का यह रोबोट देख बहुत प्रभावित हुये थे। उन्होंने कहा था कि जब यह प्रोडक्ट लॉन्च होगा तो वो पहला ऑर्डर स्वयं देंगे। इस कृषि मेले में विभिन्न जिलों के 5 हजार किसानों ने एग्रो बोट खरीदने में रूचि दिखाई थी।

एसआर पब्लिक स्कूल में आयोजित सम्मान समारोह में मुख्य अतिथी राजेश कृष्ण बिरला ने कहा कि कोटा के बेटे ने खेती में नई क्रांति लाने के लिये सस्ती तकनीक विकसित कर शहर व प्रदेश का नाम रोशन किया है। स्कूल चेयरमैन आनंद राठी ने कहा कि शहर के मध्यमवर्गीय परिवार के एक होनहार छात्र को राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री के हाथों अवार्ड मिलना गर्व की बात है। इस अवसर पर स्टार्टअप इक्की फूड्स के सह संस्थापक अमित कुमार व आई स्टार्ट कोटा के कौस्तुभ भट्टाचार्य, अशोक मीणा, मनोज राठी सहित गणमान्य नागरिक, शिक्षक व स्कूली छात्र मौजूद रहे। प्रिंसिपल आलेखा कपलाश ने सबका आभार जताया।

# 1446 यात्रियों को लेकर पहली "आस्था स्पेशल ट्रेन" अयोध्या रवाना

**जोधपुर,** (कासं)। देश की पहली आस्था स्पेशल (04817) ट्रेन जोधपुर (भगत की कोठी रेलवे स्टेशन) से अयोध्या के लिए रवाना हुई। रविवार दोपहर करीब साढ़े बारह बजे जय श्रीराम के नारों से पूरा स्टेशन परिसर गूंज उठा। 1446 यात्रियों को लेकर सोमवार को यह ट्रेन अयोध्या पहुंचेगी। ट्रेन की सुरक्षा व्यवस्था के पुख्ता इंतजाम किए गए हैं। हर बोगी में रेल पुलिस का मूवमेंट रहेगा। रेल विभाग के साथ ही संतों ने ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। आस्था स्पेशल ट्रेन में जोधपुर के अलावा फलोदी, जैसलमेर, बाड़मेर से भी राम भक्त सवार होकर अयोध्या के लिए गए हैं। सुबह नौ बजे से ही रामभक्तों के आने का सिलसिला शुरू हो गया था। यहां पर उन्हें रेल प्रशासन व हिंदू संगठनों के प्रतिनिधियों ने यात्रा के नियमों के बारे में बताया। सभी को उनके कोच नंबर और टिकट नंबर देकर सीट पर बिठाया गया। ट्रेन में कई कार सेवक और उनके परिवार भी शामिल हुए।

डीआरएम पंकज कुमार सिंह ने बताया कि जोधपुर से रविवार दोपहर 12:15 बजे ट्रेन को रवाना किया गया। इस आस्था स्पेशल ट्रेन को आईआरसीटीसी के माध्यम से बुक करवाया गया था। यात्रियों के लिए बुकिंग आधार कार्ड के माध्यम से की गई थी। ट्रेन में 24 कोच हैं। अयोध्या तक जाने वाली यह ट्रेन मेड़ता रोड, डेगाना, खाटू होते हुए अयोध्या तक पहुंचेगी। रास्ते में कुल 20 स्टेशन आएंगे। 16 स्लीपर, 6 एसी कोच और दो एसएलआर कोच हैं। 1250 किलोमीटर की यात्रा तय कर 26 घंटे 15 मिनट में सोमवार दोपहर 2:30 पर यह ट्रेन अयोध्या धाम पहुंचेगी। ट्रेन में यात्रियों की सुरक्षा के लिए एक सब इंस्पेक्टर के साथ 6 पुलिस और आरपीएफ जवानों को तैनात किया गया है, जो हर कोच में मौजूद रहेंगे। इनमें से 2 महिला कॉन्स्टेबल भी हैं।

दर्शन के लिए जा रहे एक कारसेवक ने बताया कि 1990 की कार सेवा में मैं अयोध्या गया था। उस समय मुलायम सिंह की सरकार ने लाठियां बरसाई थी। हमारे साथ अत्याचार किया गया था। मैं अपने 20 दिन की बच्ची को ससुराल में छोड़कर कारसेवा के लिए गया था। वहां के हालात बहुत ही भयावह थे और हमें ऐसा लग रहा था मंदिर नहीं बनेगा, लेकिन हमारे जिंदा रहते हमारी आंखों के सामने प्रभु श्री राम का मंदिर बनकर तैयार हो चुका है। अब दर्शन के लिए जा रहे हैं तो मन में बहुत उत्साह है। इसे हम शब्दों में बयां नहीं कर पा रहे हैं। ये जीवन का सबसे स्वर्णिम पल है।

इस दर्शन यात्रा को लेकर यात्रियों में काफी उत्साह नजर आया। 1992 में ढांचे का अवशेष लेकर आए कारसेवक ने बताया कि हमें इटावा में रोक दिया गया था। आज इस बात को लेकर खुशी है कि हम अयोध्या दर्शन के लिए जा रहे हैं। जो प्रभु श्री राम की मर्जी से ही मंदिर बनकर तैयार हुआ है। उन्होंने कहा 1992 में जब ढांचा गिराया गया था तब भी हम कारसेवा में शामिल थे। उस समय घर वालों ने यही कहा था कि वापस लौट कर आओ तो कुछ प्रसाद जरूर लेकर आना। हमने घर वालों के संकेत समझा और वहां से ढांचे के अवशेष अपने साथ लेकर आए। आज इस बात की खुशी है कि रामलला ने हमें बुलाया है।

एक अन्य कारसेवक ने बताया कि हमलोग बड़ी संख्या में अयोध्या पहुंचे थे। कारसेवा में जाने के लिए कई समस्याएं सामने आईं। बावजूद इसके हमने कारसेवा की।

## मसूदा में पैंथर की दस्तक

**मसूदा,** (निसं)। मसूदा उपखंड के ग्राम डेबरा बावड़ी में पैंथर ने हमला कर एक गाय को शिकार बनाया। प्राप्त जानकारी के अनुसार डेबरा बावड़ी के तलाई के पास रात्रि में पैंथर ने हमला कर एक गाय को अपना शिकार बनाया। इसकी जानकारी ग्रामीणों को मिलने पर ग्रामीण इसकी सूचना वन विभाग को दी। वनरक्षक हजारीलाल चौधरी ने क्षेत्र का दौरा कर पैंथर को पकड़ने के लिए पिंजरा लगाए जाने की बात कही।

ग्रामीण प्रधान सिंह रावत ने बताया कि गत रात्रि को पैंथर एवं दो शावक के दिखाई देने के बाद इसकी सूचना वन विभाग को दी। इसके बाद वन विभाग हरकत में आया और रात्रि गश्त बढ़ाते हुए उसे क्षेत्र में एक पिंजरा लगाया गया है ताकि पैंथर को पकड़ा जा सके। कुछ ग्रामीणों ने बताया कि प्रात पैंथर के साथ दो शावक भी दिखाई दिए थे। पैंथर एवं शावक होने की सूचना मिलने पर मसूदा वन रक्षक हजारी लाल चौधरी व वनकर्मी मौके पर पहुंचे एवं ग्रामीणों के बताए गए स्थल पर पैंथर को पकड़ने के लिए पिंजरा लगाया।

## राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

**सोमवार 29 जनवरी, 2024**

माघ मास, कृष्ण पक्ष, चतुरथी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2080, पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र सांय 6:53 तक, शोभन योग प्रातः 9:43 तक, बव करण सांय 7:33 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 1:44 से कन्या राशि में संचार करेगा।

**ग्रह स्थिति:** सूर्य-मकर, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-धनु, बुध-धनु, गुरू-मेष, शुक्र-धनु, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज संकष्ट चतुरथी और तिलकुटा चौथ व्रत है। चन्द्रोदय जयपुर में रात्रि 9:18 पर होगा।

**श्रेष्ठ चौघड़िया:** अमृत सूर्योदय से 8:38 तक, शुभ 9:59 से 11:19 तक, चर 2:00 से 3:21 तक, लाभ-अमृत 3:21 से सूर्यास्त तक।

**राहूकाल:** 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 7:18, सूर्यास्त 6:02

**मेष**
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों का विस्तार होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। आज परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

**वृष**
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

**मिथुन**
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

**कर्क**
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है।

**सिंह**
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। महत्वपूर्ण मामलों में उचित परामर्श मिल सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। शुभ और धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

**कन्या**
आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। धन हानि का भय बना रहेगा। अनावश्यक धन खर्च होगा। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

**तुला**
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

**वृश्चिक**
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**धनु**
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

**मकर**
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आज नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी।

**कुंभ**
व्यावसायिक सफलता से आत्मविश्वास बढ़ेगा। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी और व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

**मीन**
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। स्वास्थ्य में सुधार होगा। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।